"नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः।
उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः ॥"

हिन्दी अनुवाद

असत् सकल (सारा) विकारजगत् की सत्ता नहीं है। सत् आत्मा का कभी अभाव नहीं होता। इसप्रकार तत्त्वदर्शियों ने सत् और असत् पदार्थों के स्वरूप का निर्णय (निर्धारण) किया है।

भावार्थ (व्याख्या)

अद्वैतदर्शन के अनुसार- ब्रह्म सत्य है और जगत् मिथ्या। ब्रह्म ~~की पर~~ यथार्थ तत्त्व है। ब्रह्म के अतिरिक्त जितनी भी प्रतीत हो रही वस्तुएँ हैं, वे असत् हैं। शीत-उष्ण आदि परस्पर विरोधी पदार्थ विकार हैं, सर्वदा परिवर्तित (बदलते) होते ~~र~~ हैं, इसलिए असत् हैं।

(क) जिन वस्तुओं को विषय बनाने वाली बुद्धि व्यभिचरित होती है, वे वस्तुएँ असत् होती हैं। (ख) जिसको अपना विषय बनाने वाली बुद्धि नहीं बदलती है वह वस्तु सत् ~~या~~ अथवा परमार्थ वस्तु होती है। सत् होने के कारण आत्मा भूत, वर्तमान और भविष्य - तीनों कालों में व्याप्त होता है।

ब्रह्म का नाम तत् है। ब्रह्म के भाव अर्थात् स्वरूप को तत्त्व कहते हैं। ब्रह्म के स्वरूप को देखने का जिनका शील है, वे तत्त्वदर्शी कहलाते हैं। इन तत्त्वदर्शी पुरुषों ने ही आत्मा तथा अनात्मा के स्वरूप का निर्धारण किया है।

तुम (अर्जुन) भी तत्त्वदर्शी पुरुषों की ~~ब~~ भाँति शोक तथा मोह का परित्याग कर दो तथा शीत-उष्ण, सुख-दुःख आदि परस्पर विरोधी पदार्थों को मृगमरीचिका में जल की भाँति असत् मानकर सहन करो।